डॉ. शशिभूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

उत्तर छायावादी काव्य

छायावादी काव्य की अन्तिम सीमा 1936 ई० मानी गई है। कुछ अन्य विद्वान इस सीमा को 1938 ई० भी स्वीकार करते हैं। छायावादोत्तर काव्य के रूप में हिन्दी में दो प्रकार की कविताएँ प्रमुखता से लिखी गई, जिसे छायावाद और प्रगतिवाद के बीच की कविता या उत्तर छायावादी कहा गया। इसे दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

1. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा
2. प्रणमूलक वैयक्तिक काव्यधारा

1. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा— राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी प्रमुख हैं। इनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

1. देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना
2. स्वतंत्रता संग्राम के लिए उद्बोधन
3. देश पर बलिदान हो जाने की भावना
4. आर्य संस्कृति एवं गाँधीवाद का समर्थन
5. जन जागरण का संदेश

2. प्रणमूलक वैयक्तिक काव्यधारा— प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा के अन्तर्गत

Scanned by CamScanner

प्रेम और मस्ती की कविताएँ लिखने वाले कवि – हरिवंश राय बच्चन, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', नरेन्द्र शर्मा आदि हैं।

Scanned by CamScanner